(६) वे मुनिवर कब मिलि हैं उपगारी.....

वे मुनिवर कब मिलि हैं उपगारी।
साधु दिगम्बर, नगन निरम्बर, संवर भूषण धारी॥ टेक॥

कंचन काँच बराबर जिनके, ज्यों रिपु त्यों हितकारी;
महल मसान, मरण अरु जीवन, सम गरिमा अरु गारी॥ 1॥

सम्यग्ज्ञान प्रधान पवन बल, तप पावक परजारी;
शोधत जीव सुवर्ण सदा जे, काय-कारिमा टारी॥ 2॥

जोरि युगल कर भूधर विनवे, तिन पद ढोक हमारी;
भाग उदय जब दर्शन पाऊँ, ता दिन की बलिहारी॥ 3॥